SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

"मैला आंचल" की सर्वश्रेष्ठ आंचलिक भाषा शैली

भूपेन्द्र सिंह, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
आशुतोष चतुर्वेदी, शोधार्थी, हिंदी विभाग, एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी एवं उत्कृष्ट), महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
भूपेन्द्र सिंह, (Ph. D.), हिंदी विभाग,
आशुतोष चतुर्वेदी, शोधार्थी, हिंदी विभाग,
एम. फिल. द्वितीय सेमेस्टर
शा. ठाकुर रणमत सिंह (स्वशासी एवं उत्कृष्ट),
महाविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 06/08/2021
Revised on : -----
Accepted on : 13/08/2021
Plagiarism : 00% on 06/08/2021

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Friday, August 06, 2021
Statistics: 0 words Plagiarized / 883 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

^*eSyk vkapy^ ^ dh loZJs"B vkapfyd Hkk"kk 'kSyh A lkjka'k %& eSyk vkapfyd miU;kl ds #i esa eSyk vkapy dh lQyrk dk lcls egRoiw.kZ dkj.k mldh Hkk"kk 'kSyh dks gh ekuk tkrk gS js.kq us Hkk"kk ds Lrj ij vn~Hkqr ç;ksx'khyrk dk ifjp; nsrs gq, ubZ l'tukRedmiyfC/k dh gS ls gSA d=kkf'kYih Q.kh'ojukFk js.kq dh bl ;qxkUrdkjh vkSiU;kfld -fr esa dFkkf'kYi ds lkFk&lkFk Hkk"kkf'kYi vkSj 'kSyhf'kYi dk foy{k.k

lkeatL; gS tks ftruk lgt&LokHkkfod gS] mruk gh çHkkodkjh vkSj eksgd Hkh gSA vkapfyd

शोध सार

मैला आंचलिक उपन्यास के रूप में मैला आंचल की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण कारण उसकी भाषा शैली को ही माना जाता है। रेणु ने भाषा के स्तर पर अद्भुत प्रयोगशीलता का परिचय देते हुए नई सृजनात्मक उपलब्धि हासिल की है। कथाशिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु की इस युगान्तकारी औपन्यासिक कृति में कथाशिल्प के साथ–साथ भाषाशिल्प और शैलीशिल्प का विलक्षण सामंजस्य है जो जितना सहज–स्वाभाविक है, उतना ही प्रभावकारी और मोहक भी है। आंचलिक उपन्यास के रूप में मैला आँचल की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण कारण उसकी भाषा–शैली को ही माना जाता है। रेणु में भाषा स्तर पर अद्भुत प्रयोगशीलता का परिचय देते हुए नई सृजनात्मक उपलब्धि हासिल की है। मैला आँचल की भाषा–शैली आंचलिकता के तत्व को पूरी तन्मयता से धारण करती है।

मुख्य शब्द

रेणु, उपन्यास, आंचलिक, भाषा, उपयोगिता.

इस उपन्यास में सामान्यतः देशज भाषा का प्रयोग किया गया हैं क्योकि आंचलिक संस्कृतिक में देशज शब्दाबली केंद्र में होती है। इसके अतिरिक्त तद्भव शब्दावली का भी पर्याप्त मात्रा में किया गया है उदा० तहसीलदार की बेटी जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गांव गम–गम करने लगता है अर्थात् महकने लगता है। इस उपन्यास में अंग्रेजी के बहुत से शब्दो का प्रयोग किया गया है परंतु रेणु जी उन शब्दो को भी आंचलिक तेवर के साथ लाया है उदा०

भैसचरम (Vice-chairman)

रायबरेली (Library)

पुलोगराम (Programme)

इस उपन्यास में कही–कही मानक भाषा का प्रयोग हुआ है जिसमे ना सिर्फ तत्सम बल्कि संस्कृत की भी शब्दावली आयी हैं। तत्सम भाषा का उदा० इस प्रकार है वेदांत... भौतिकवाद..... सापेक्षवाद... मानवतावाद् हिंसा से जर्जर प्रकृति रो रही है। रेणु ने आंचलिक शैली का निर्वाह करते हुए लोकगीत तथा लोकसंगीत के तत्व को उपन्यास में महत्वपूर्ण स्थान दिया है उदा० भउजिया के गीत, विदापद के नृत्य और जाट जहिन के खेल जैसे प्रसंगो मे बहुत से लोकगीत आये है। आंचलिक भाषा शैली की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विशेषता होती है मुहावरेदार भाषा, इसका प्रयोग इस उपन्यास में जगह–जगह किया गया है उदा० माघ का जाड़ा तो बाघ को भी डंडा कर देता है।

आंचलिक भाषा शैली शब्दो में निहित ध्वन्यात्मकता या नदात्मक क्षमता का प्रयोग है ''डिम, डिमिक–डिमिक''।

रेणु जी ने प्रतीकात्मक भाषा का भी खूब प्रयोग किया है, कहीं–कहीं उनकी भाषा मे प्रतीक और अप्रस्तुत इस प्रकार शामिल हो जाते है कि गद्य मे पद्य की सुंदरता उत्पन्न होने लगती है। इस उपन्यास के नायक मुख्य पात्र डॉक्टर प्रशांत इसी भाषा में कहता है की मै ''प्यार की खेती करना चाहता हूं, आंसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहरायेंगे''।

रेणु जी ने ना केवल अंचल के भूगोल के सुंदर बिम्ब बनाए है बल्कि विभिन्न चरित्र को बिंबो में उतार दिया है उदा० गणेश की नानी, बुढ़ापे में भी सुंदरता नस्त नहीं हुई, जिसके चेहरे पर झुर्रियों की एक नई खूबसूरती ला दी है, सिर के सफेद बालों के घुघुराले बालो की लट ओठे की लाली ज्यों की त्यों है।

आंचलिक भाषा शैली में एक महत्वपूर्ण गुण अंतर पाठ्यता का होता हैं इसका अर्थ है कि लोक संस्कृत में किसी बात को कहने के लिए किसी प्रसिद्ध ग्रंथ या धार्मिक परंपरा में चली आ रही बातो को बार बार प्रमाण के तौर पर उद्धृत किया जाता हैं। इस उपन्यास में इस तरह के कई प्रसंग सामने आते है उदा० ''हानि–लाभ, जीवन–मरण, जस–अपजस, विधि हाथ'', बीजक से भी लक्ष्मी के देह की सुगंध निकलती हैं। यद्यपि इस उपन्यास की भाषा अत्यंत सृजनात्मक एवं प्रयोगशील है किंतु, यह निरापद नही है। इसमें एक ओर रेणु जी को क्षमता दी की वह मेरीगंज के जीवन को उसके सारे रेशों और रंग के साथ ईमानदारी उभार सके, तो दूसरी ओर उपन्यास की बोधगम्यता के समय चुनौती का सामना भी करना पड़ता है। जो पाठक मेरीगंज या आस–पास इलाके के नही है और उस क्षेत्र की भाषा नहीं समझते उनके सामने यह भाषा दीवार बनके खड़ी हो जाती हैं। आंचलिक गीतों ने इस समस्या को और भी जटिल बना दिया है।

यह समस्या मैला आंचल उपन्यास या रेणु जी की नही है बल्कि हर आंचलिक उपन्यास की है। यदि आंचलिक उपन्यास को सफल होना है तो उसकी शर्त है कि आंचलिक जीवन अपने पूरे देशीपन के साथ उभरे। यह करने के लिए आंचलिक भाषा अनिवार्य हो जाती है इसीलिए यह समझना जरूरी है कि रेणु की प्रयोगशील भाषा ने आँचलिक उपन्यास के तौर पर मैला आंचल को मील का पत्थर बना दिया है। वही इसकी कीमत उन्हें चुकाने पड़ी है कि मैला आंचल गोदान उपन्यास की तरह हिंदी के हर पाठक तक पहुंच नहीं बना सका।

निष्कर्ष

स्पष्ट है कि मैला आंचल की भाषा शैली आंचालिकता के तत्व को पूरी तन्मयता को धारण करती है और इसी भाषा शैली के कारण मैला आंचल सर्वश्रेठ उपन्यास माना जाता है। कथाशिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु की इस युगान्तकारी औपन्यासिक कृति 'मैला आँचल, में कथाशिल्प के साथ–साथ भाषा और शैली का विलक्षण सामंजस्य है, जो जितना सहज–स्वाभाविक है, उतना ही प्रभावकारी और मोहक भी है। ग्रामीण अंचल की ध्वनियों और धूसर लैडस्केप्स से सम्पन्न यह उपन्यास हिन्दी कथा–जगत में पिछले कई दशकों से एक क्लासिक रचना के रूप में स्थापित है।

संदर्भ सूची

1. फणीश्वरनाथ 'रेणु', *''मैला आँचल''*, (प्रथम संस्करण) भूमिका।

2. बंसीधर, हिन्दी के आँचलिक उपन्यास सिद्धांत और समीक्षा।
3. ठाकुर, देवेश, *मैला आँचल',* की रचना प्रक्रिया ।
4. उपाध्याय, कृष्णदेव, *'लोक साहित्य'* की भूमिका।

****